INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 5 | JUNE - 2022

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद एवं उसके ग्रंथालयों में ज्ञान प्रबंधन : एक अवलोकन

राजा राम भाट
सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष एवं शोधार्थी, मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर,

सार (Abstract)

ज्ञान प्रबंधन की महत्ता को निर्दिष्ट करते हुए भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून एवं उसके सम्बद्ध संस्थानों के ग्रंथालयों मे ज्ञान प्रबंध का एक विवेचनात्मक अध्ययन करना एवं संस्थाओं की स्थापना और उनकी विकास यात्रा में पुस्तकालय संग्रह एवं सेवाओं पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है।

बीज शब्द (Keyword): ज्ञान प्रबंधन, आई सी एफ आर ई, देहारादून.

प्रस्तावना (Preface) :

समय के बदलाव के साथ–साथ समाज में शोध के बढ़ते महत्व के कारण शोधार्थियों द्वारा ग्रंथालयों से विभिन्न प्रकार की सूचना सेवाओं की अपेक्षा की जाने लगी हैं। ग्रंथालय में इन सूचना सेवाओं की आवश्यकताओं के कारण एक ग्रंथालय अपने मूल स्वरूप के साथ एक सूचना केंद्र के रूप में परिवर्तित हो गयें है और यह ग्रंथालय एवं सूचना केंद्र के नाम से पहचाने जाने लगे हैं । समय, शोध एवं विकास के इसी तरह के बदलाव ने ग्रंथालय गतिविधियों को सूचना प्रबंधन एवं ज्ञान प्रबंधन गतिविधियों में परिवर्तित कर दिया हैं। ज्ञान का प्रबंधन उपभोक्ता के लिए आवश्यक हैं ।

ज्ञान (Knowledge) :

ज्ञान के बारे में विद्वानों ने ज्ञान को मात्र अनुभव तक ही सिमित नही माना हैं, क्योंकि अनुभव में से ज्ञान को पृथक करने के लिए उन्होंने कुछ कसौटियां बनाई हैं जिन पर परखने के बाद अनुभव को ज्ञान रूप में स्वीकार किया जा सकता हैं ।

वेबस्टर डिक्शनरी के अनुसार – "ज्ञान वह है जो ज्ञात है और जो ज्ञात होने के बाद संचित रहता है या वह जानकारी है जो वास्तविक अनुभव द्वारा प्राप्त होती हैं" ।[1]

ज्ञान को दो प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है :

i- मौन ज्ञान – यह वह ज्ञान है जो लोगों के मष्तिष्क के अंदर है और व्यवस्थित नहीं है । यह प्रकृति में सहज, प्रयोगात्मक और निर्णय है, इसे स्पष्ट करना मुश्किल है ।

ii. स्पष्ट ज्ञान – यह ज्ञान ठीक से व्यवस्थित है और संहिताबद्ध है । यह प्रलखों, प्रक्रियाओं और डेटाबेस के रूप में है ।

1. According to Webster's Dictionary, Knowledge is "the fact or condition of knowing something with familiarity gained through experience or association"

ज्ञान प्रबंधन (Knowledge Management) :

ज्ञान प्रबंधन एक संगठन के ज्ञान और जानकारी को बनाने, साझा करने, उपयोग करने और प्रबंधित करने की प्रक्रिया है । यह ज्ञान का सर्वोत्तम उपयोग करके संगठनात्मक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए एक बहु–विषयक दृष्टिकोण को संदर्भित करता हैं । 1991 से ग्रंथालय और सूचना विज्ञान के क्षेत्र में पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रम में ज्ञान प्रबंधन का योगदान रहता हैं । साथ ही कई परामर्श कंपनियां इन संगठनों को ज्ञान प्रबंधन के संबंध में सलाह भी देती हैं ।

ज्ञान प्रबंधन प्रतिस्पर्धी वातावरण में संगठनात्मक अनुकूलन, अस्तित्व और उत्कृष्टता के महत्वपूर्ण उद्देश्यों को पूरा करता है अनिवार्य रूप से यह सूचना, प्रौद्योगिकी, रचनात्मक और मानव की अभिनव क्षमता के संयोजन द्वारा तालमेल प्रभाव की तलाश करने के लिए संगठनात्मक प्रक्रिया का प्रतीक हैं । ज्ञान प्रबंधन का लक्ष्य सीखने और अनुकूलन प्रक्रिया के माध्यम से व्यक्तिगत और व्यावसायिक प्रदर्शन को बनाए रखना है। ज्ञान प्रबंधन न केवल जीवित रहने के लिए बल्कि सफल बनाने में भी सहायता करता हैं ।

ज्ञान प्रबंधन को नए कौशल, क्षमता और विशेषज्ञता बनाने, मौजूदा लोगों को विकसित करने और सुधारने और एक संगठन के सदस्यों द्वारा ज्ञान के उपयोग को साझा करने की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता हैं । एक सतत प्रक्रिया के रूप में ज्ञान प्रबंधन में रचनात्मकता, नवाचार और सीखना शामिल हैं ।

ज्ञान प्रबंधन को महत्वपूर्ण ज्ञान के स्पष्ट और व्यवस्थित प्रबंधन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें इसके निर्माण की प्रक्रिया, संगठन, प्रसार, उपयोग एवं व्यावसायिक उद्देश्यों की खोज के बारे में जाना जा सकता हैं । यह वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से संगठन अपनी बौद्धिक और ज्ञान–आधारित संपत्ति से मूल्य उत्पन्न करते हैं। इसके अंतर्गत रणनीतियों और अंतर्दृष्टि और अनुभवों को अपनाने, बनाने, वितरित करने और सक्षम करने के लिए संगठन में उपयोग की जाने वाली रणनीतियों और प्रथाओं की एक श्रृंखला शामिल हैं ।

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद एवं उसके ग्रंथालयों मे ज्ञान प्रबंधन (Knowledge Management of Libraries of Indian Council of Forestry Research and Education (ICFRE)

परिचय (Introduction) :

भारतीय वानिकी अनुसंधान परिषद, देहरादून का गठन राष्ट्रीय वानिकी अनुसंधान प्रणाली के अंतर्गत किया गया है इसका उद्देश्य आवश्यकता आधारित योजना के माध्यम से वानिकी अनुसंधान का समग्र विकास में सभी को शामिल करते हुए अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार को बढ़ावा देना, संचालित करना और समन्वय करना तथा वानिकी के शोध संबन्धित हर समस्या का समाधान करना है जलवायु परिवर्तन जैसी वैश्विक चिंताओं सहित इस क्षेत्र में उभरते उद्देश्यों के साथ, जैविक विविधता का संरक्षण, मरुस्थलीकरण की रोकथाम और स्थाई संसाधनों का प्रबंधन एवं विकास परिषद के सामने बड़ी चुनौती हैं ।

देश में वानिकी अनुसंधान की जरूरतों को पूरा करने के लिए भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद के नौ अनुसंधान संस्थान और चार क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र स्थापित किए गए है । ये अनुसंधान संस्थान देश के विभिन्न जैव–भौगोलिक यथा जोधपुर, देहरादून, शिमला, हैदराबाद, कोयंबटूर, रांची, बैंगलोर, जोरहाट और जबलपुर में एवं केंद्र आइजोल, अगरतला, छिंदवाड़ा और इलाहाबाद में स्थित है । ग्रंथालय क्षेत्र में परिषद का उद्देश्य वानिकी के लिए एक राष्ट्रीय वन ग्रंथालय और सूचना केंद्र का विकास और रखरखाव करना है ।

1-राष्ट्रीय वन ग्रंथालय और सूचना केंद्र, देहरादून (National Forest Library and Information Centre, Dehra Dun)

परिचय (Introduction) :

यह वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून का ग्रंथालय है जिसका इतिहास 1906 से वन अनुसंधान संस्थान के इतिहास के समानांतर चल रहा है । ग्रंथालय की शुरुआत कुछ सौ ग्रंथों एवं अंग्रेजी और जर्मन भाषाओं में कुछ आवधिक/सामयिक शीर्षकों के साथ एक छोटे से कमरे में हुई थी। 1929 में वन अनुसन्धान संस्थान को चकराता रोड पर अपने नवनिर्मित भवन में स्थानांतरित किया गया, जिसे बाद में संस्थान परिसर में चतुर्वेदी रोड पर ग्रंथालय के लिए बने अलग भवन में लगभग 1-5 लाख ग्रन्थों और लगभग 300 तत्कालीन आवधिक

शीर्षकों के साथ वहां स्थानांतरित कर दिया गया। भारत में वर्ष 1986 में, वन अनुसन्धान संस्थान के तत्कालीन केंद्रीय ग्रंथालय को राष्ट्रीय वन ग्रंथालय और सूचना केंद्र में रूपांतरित किया गया, जिससे पुस्तकों का अधिग्रहण और पत्रिकाओं की सदस्यता कई गुना तक बढ़ गई। इसके साथ ही, ग्रंथालय ने अपने कार्यों का कम्प्यूटरीकरण भी शुरू कर दिया । कई सीडी–रोम आधारित ग्रंथसूची डेटाबेस तैयार किए जाने लगे। सभी अद्यतन सुविधाओं के साथ एक नया आधुनिक ग्रंथालय भवन वन अनुसंधान संस्थान के पियर्सन रोड पर बनाया गया और वर्ष 2000 में राष्ट्रीय वन ग्रंथालय और सूचना केंद्र को उसमें स्थानांतरित कर दिया गया।

राष्ट्रीय वन ग्रंथालय और सूचना केंद्र में ग्रंथो का बड़ा हिस्सा वानिकी से संबंधित हैं । लेकिन इसके अलावा रसायन विज्ञान, जैविक विज्ञान, कृषि, वन्यजीव, पादप विज्ञान आदि विषयों पर दस्तावेजों का एक बड़ा संग्रह उपलब्ध हैं। ग्रंथालय में विश्वकोशों, शब्दकोशों, निर्देशिकाओं, हैंडबुक के साथ साथ दुर्लभ ग्रन्थों (rare books) से भंडारित एक उत्कृष्ट संदर्भ अनुभाग हैं । इसके अलावा ग्रंथालय में वानिकी पर एक ग्रे साहित्य (Grey Literature) संग्रह उपलब्ध है जिसमें थीसिस और शोध प्रबंध, शोध रिपोर्ट, सम्मेलन की कार्यवाही एवं वन कार्य योजना रिपोर्ट आदि प्रलेख शामिल हैं जो कि न तो औपचारिक रूप से प्रकाशित होते हैं और न ही व्यावसायिक रूप से उपलब्ध होते हैं। ग्रंथालय में विभिन्न वन प्रजातियों, विभिन्न विषयों और विभिन्न देशों पर अनुसंधान और अन्य उपयोगी लेखों वाली 7,025 लेजर फाइलें उपलब्ध हैं ।

ग्रंथालय संग्रह की पत्रिकाओं में सबसे उल्लेखनीय हैं – 1835 से ट्रांजैक्शन ऑफ द जूलॉजिकल सोसाइटी ऑफ लंदन, 1872 से स्कॉटिश आर्बोरिकल्चरल सोसाइटी, 1875 से लिनियन सोसाइटी ऑफ़ लंदन, 1880 से जस्टस लीबिग की एनालेन डेर केमी, 1873 से नेचर, 1882 से सोसाइटी ऑफ केमिकल इंडस्ट्री की पत्रिका, और 1875 से इंडियन फोरेस्टर पत्रिका । वर्तमान में इंडियन फोरेस्टर में भारत और विदेशों से वानिकी, कृषि, जैविक विज्ञान, रसायन विज्ञान, आदि जैसे संबंधित विषयों पर महत्वपूर्ण शोध लेख प्रकाशित किये जाते हैं। ग्रंथालय के पास वन विज्ञान जैसे ग्रंथसूची डेटाबेस की सदस्यता भी उपलब्ध हैं । ग्रंथालय ने सीडी–रोम पर एकीकृत सॉफ्टवेयर डिजाइन करके अपने गृहप्रकाशन (in house publication) के साथ–साथ सूचना पुनर्प्राप्ति कार्यों को कम्प्यूटरीकृत किया है, जिसे ग्रंथालय ने अपने उपयोक्ता को ऑनलाइन एक्सेस करने में सुविधा प्रदान की हैं । इसके अलावा, ग्रंथालय अपने उपयोगकर्ता को संदर्भ, रेफरल, परिसंचलन, रिप्रोग्राफी, अंतर–ग्रंथालय ऋण आदि अन्य सभी सेवाएँ प्रदान करता हैं ।

वन अनुसंधान संस्थान द्वारा प्रकाशित प्रकाशनों का विपणन एक महत्वपूर्ण गतिविधि हैं । राष्ट्रीय वन ग्रंथालय और सूचना केंद्र को संस्थान द्वारा प्रकाशित सभी दस्तावेजों के विपणन का कार्य सौंपा गया है इसके साथ ही इसके संस्थान ग्रंथालयों से भी यह प्रकाशन खरीदे जा सकते हैं । पर्यावरण और वन मंत्रालय, भारत सरकार ने वर्ष 1997 में ग्रंथालय को वानिकी पर पर्यावरण सूचना प्रणाली केंद्र (ENVIS) के रूप में नामित किया।

परिसंचरण सेवा (Circulation Service)

राष्ट्रीय वन ग्रंथालय की सुविधाओं और सेवाओं का लाभ उठाने के लिए इसका सदस्य होना आवश्यक हैं । सदस्यता की निम्नलिखित श्रेणियां उपलब्ध हैं :

आंतरिक सदस्य (Internal Members):

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, वन अनुसंधान संस्थान और एफआरआई डीम्ड विश्वविद्यालय के प्रतिनियुक्त वन अधिकारी, वैज्ञानिक, छात्र, रिसर्च स्कॉलर और तकनीकी व अन्य कर्मचारी राष्ट्रीय वन ग्रंथालय के आंतरिक सदस्य हैं। जिनकी पात्रता के अनुसार उन्हें ग्रंथालय से आदान प्रदान की सुविधा प्रदान की जाती है ।

सहयोगी सदस्य (Associate Members):

इंद्रा गाँधी राष्ट्रीय वन अकादमी (IGNFA) में सकाय अधिकारी (Dean), परिवीक्षाधीन भारतीय वन सेवा अधिकारी, SFS कॉलेज (राज्य वन संस्थान) के अधिकारी और FSI (भारतीय वन सर्वेक्षण) के अधिकारी सहयोगी सदस्य बनाये जाते हैं। ये ग्रंथालय में उपलब्ध निर्धारित प्रारूप को अपने संस्थान से अग्रेसित करवाकर ग्रंथालय से आदान प्रदान की सुविधा प्राप्त कर सकते है ।

अस्थायी सदस्यता (Temporary Members):

ग्रंथालय भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद मुख्यालय एवं वन अनुसंधान संस्थान द्वारा नियुक्त सलाहकार (consultents) को अस्थायी तौर पर ग्रंथालय से आदान प्रदान की सुविधा प्रदान करता है ।

विशेष सदस्यता (Special Membership):

ग्रंथालय द्वारा 5000/– रुपये की आजीवन गैर–वापसी योग्य जमा राशि और 5000/– रुपये की वापसी योग्य सुरक्षा राशि पर अधिकतम 4 ग्रंथ जारी की जा सकती है ।

देय हेतु प्रतिबंधित साहित्य (Not to be Issued Literature) :

राष्ट्रीय वन ग्रंथालय और सूचना केंद्र द्वारा निम्नलिखित प्रकार की सामग्री ग्रंथालय द्वारा जारी नहीं की जाती है, संदर्भ कार्य (Reference Works),असूचीबद्ध सामग्री (Uncatalogued Material),पत्रिकाओं के नवीनतम अंक। (Latest Issues of Journals),मानचित्र और स्थलाकृतिक पत्रक (Maps and Topographical Sheets),थीसिस / शोध प्रबंध (Theses/Dissertations),दुर्लभ और अप्रचलित दस्तावेज़।(Rare And Out of Print Documents),ग्रंथ सूची पत्रिकाओं का सार/अनुक्रमनीकरण पत्रिकाएँ। (Abstracting/IndeÛing Bibliographical Periodicals),सीडी रोम (CD&Roms) इत्यादि

अतिदेय प्रभार (Over Due Charges): देय तिथि पर वापस नहीं की गई ग्रंथ पर अतिदेय प्रभार का प्रावधान नियमानुसार किया गया हैं।

उधार ली गई ग्रन्थों की हानि/क्षति (Loss/Damage of Borrowed Books):

यदि किसी उपयोगकर्ता को किसी ग्रंथ के एक समुच्चय का एक खंड जारी किया जाता है और उधारकर्ता से खो जाता है, तो वह पूरे सेट को बदलने के लिए उत्तरदायी हो सकता हैं । यदि आवधिक मात्रा का एक अंक क्षतिग्रस्त हो जाता है या खो जाता है तो वह पूर्ण समुच्चय को बदलने के लिए उत्तरदायी हो सकता हैं ।

ग्रन्थों का आरक्षण (Reservation of books):

यदि ग्रंथ उस समय किसी दूसरे उपयोक्ता को जारी है तो उधारकर्ता अपने लिए उस ग्रंथ को आरक्षित करवा सकता हैं । उन्हें चाही गयी जानकारी के साथ आरक्षण फार्मेट भरना होगा। जब ग्रंथ वापस आ जाता है इसकी सूचना राष्ट्रीय वन ग्रंथालय के सूचना पट्ट पर प्रदर्शित की जाती हैं ।

मांग पर लेख (Articles on Demand) :

उपयोक्ता जो कि संस्थान परिसर में नहीं रहते है वो इच्छित लेख (Article) के लिए एक ई–मेल भेज सकते हैं । यह सेवा परिषद के अन्य ग्रंथालयों और सूचना केन्द्रों को भी उपलब्ध है । इसके लिए वेब लिंक और पूरे पते के साथ एक समय में केवल एक लेख की मांग पूर्ति की जा सकती है ।

रेप्रोग्राफी सेवाएं (Reprography Services) :

ग्रंथालय के अंदर भुगतान आधार पर फोटो कॉपी सेवा भी उपलब्ध हैं । कॉपीराइट मुद्दों के कारण पूर्ण ग्रंथ की फोटोकॉपी अत्यन्त प्रतिबंधित हैं।

अंतर ग्रंथालय ऋण (Inter Library Loan Services) :

भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद संस्थानों को एक महीने की अवधि के लिए एक बार में 2 किताबें जारी की जा सकती हैं, बशर्ते कि उधार लेने वाला संस्थान भी राष्ट्रीय वन ग्रंथालय और सूचना केंद्र को यह सुविधा प्रदान करे। हालाँकि, 2 पुस्तकों की यह सीमा परिषद के संस्थानों पर लागू नहीं होगी।

डिजिटल ग्रंथालय सेवाएं (Digital Library Services)

राष्ट्रीय वन अभिलेखागार (National Forest Archives) : ग्रंथालय में लगभग 6 लाख पृष्ठों का डिजिटलीकरण किया गया जिसमें ग्रंथ, वन कार्य योजना प्रबंध, इंडियन फॉरेस्ट बुलेटिन, इंडियन फॉरेस्ट लेयफ़्लेट्स, हस्तलिखित पत्रक, इंडियन फॉरेस्ट मेमोरीस, इंडियन फॉरेस्ट रेकॉर्ड्स, छायाचित्र, यात्रा विवरण आदि शामिल हैं।

प्रकाशन (Publications):

एन्विस सेंटर नियमित रूप से एनविस फॉरेस्ट्री बुलेटिन प्रकाशित करता है, जो एक अर्ध–वार्षिक प्रकाशन है जिसमें वानिकी के वर्तमान मुद्दों पर लेख, ज्वलंत मुद्दों पर प्रख्यात विद्वानों के दृष्टिकोण, प्रख्यात संरक्षणवादियों के जीवनी स्केच, पर्यावरण के उतार–चढ़ाव, इंटरनेट संसाधनों पर लेख आदि हैं। वानिकी, आगामी सम्मेलनों की घोषणा, सेमिनार, प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, व्यापक ग्रंथ सूची और अन्य उपयोगी जानकारी के अंश भी इसमें शामिल किये जाते है । वन उत्पाद, वन आनुवंशिकी और वृक्ष सुधार, औषधीय पौधे, वन बीज विज्ञान और प्रौद्योगिकी, वन कीट, कीट और रोग, जलवायु परिवर्तन और वन, वानिकी सांख्यिकी, वन उत्पाद रसायन विज्ञान, गैर–लकड़ी वन उत्पाद, पर बुलेटिन के विषयगत मुद्दे इस आवधिक प्रकाशन में शामिल किये जाते हैं ।

एक अन्य प्रकाशन एनवायरनमेंट एंड फॉरेस्ट न्यूज डाइजेस्ट है, जो एक द्विमासिक प्रकाशन है जिसमें प्रमुख 20 अंग्रेजी और हिंदी भाषा के दैनिक समाचार पत्रों से चयनित पर्यावरण, वानिकी और वन्य जीवन पर लेख और महत्वपूर्ण नए तथ्य शामिल हैं। ये लेख और समाचार पर्यावरण और वन एक डेटाबेस का गठन करते हैं ।

डेटाबेस (Database):

इस तथ्य को महसूस करते हुए कि वानिकी साहित्य पर पर्याप्त ग्रंथ सूची नियंत्रण नहीं था, केंद्र ने प्रेस में भारतीय वानिकी सार, सहभागी वन प्रबंधन, प्रोसोपिस जूलीफ्लोरा, पोपलर और पर्यावरण और वन पर ग्रंथ सूची डेटाबेस संकलित करना शुरू कर दिया है। इन डेटाबेस में सार के साथ–साथ संदर्भों का ग्रंथ सूची विवरण होता हैं ।

राष्ट्रीय वन ग्रंथालय और सूचना केंद्र के मुख्य उद्देश एवं गतिविधियाँ (Main Aims and Activities of NFLIC):

- पुस्तकों और सामग्रियों की प्राप्ति की संख्या में वृद्धि करना।
- भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद के संस्थानों/केन्द्रों के लिए अधिक से अधिक पत्रिकाओं को ऑनलाइन उपलब्ध कराना।
- पर्यावरण और वन समाचार डाइजेस्ट, और एनविस फॉरेस्टरी बुलेटिन का समय पर प्रकाशन करना।
- प्रलेखों के डिजिटलीकरण की योजना।
- साहित्य खोज सेवा (Literature Search Service): राष्ट्रीय वन ग्रंथालय और सूचना केंद्र साहित्य खोज सेवा प्रदान करती है और ग्रंथ सूची को संकलित करती हैं ।

- दस्तावेज़ प्रतिपूर्ति सेवा (Document Delivery Service) : यह सेवा वैज्ञानिक समुदाय को एक मामूली शुल्क पर भारतीय और विदेशी पत्रिकाओं के लेखों की प्रतियां प्रदान की जाती हैं ।

ग्रंथालय एवं सूचना केंद्र, वन उत्पादकता संस्थान, रांची (Library and Information Centre, Institute of Forest Productivity (IFP), Ranchi)

संस्थान के ग्रंथालय के पास 6500 से अधिक वैज्ञानिक और तकनीकी पुस्तकों और पत्रिकाओं का समृद्ध संग्रह हैं । भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद द्वारा उनके ग्रंथालयों में वानिकी और संबद्ध विषयों पर प्रतिष्ठित राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिकाएं, विभिन्न वानिकी विषयों को विशेषज्ञ वैज्ञानिक साहित्य शोधकर्ताओं के उपयोग के लिए नियमित रूप से उपलब्ध करवाई जाते है । राष्ट्रीय वन ग्रंथालय और सूचना केंद्र, देहरादून से ऑनलाइन माध्यम से ऑनलाइन पत्रिकाएँ और वानिकी पर एनविस केंद्र भी सभी उपयोगकर्ताओं के लिए उपलब्ध है, उपयोगकर्ता ग्रंथ सूची डेटाबेस से भी परामर्श कर सकते हैं जैसे : भारतीय वानिकी सार,संयुक्त वन प्रबंधन, Prosopis रनसपसिवतं, Poplars, वर्तमान वानिकी साहित्य और पर्यावरण आदि।

प्रकाशनः

एनविस फॉरेस्ट्री बुलेटिन, न्यूज डाइजेस्ट; तालिका पृष्ट सेवा। इसके अलावा एनविस वेबसाइट विभिन्न वन प्रजातियों पर विस्तृत जानकारी भी देती है, इसके आलावा देश में वन आवरण, आगामी सम्मेलनों, संगोष्ठियों, और प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के बारे में जानकारी प्रदान करता है ।

1-ग्रंथालय और सूचना केंद्र, उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर (Library cum Information Centre] Tropical Forest Research Institute (TFRI), Jabalpur)

उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर के ग्रंथालय की स्थापना 1973 में वन अनुसंधान संस्थान (FRI), देहरादून के एक क्षेत्रीय केंद्र (रीजनल फारेस्ट रिसर्च सेंटर) (RFRC)) के रूप में की गयी थी । केंद्र के ग्रंथालय में मुख्य रूप से पुस्तकों के साथ साथ पहले से उपलब्ध वन संवर्धन, वन पारिस्थितिकी, जैव विविधता और पादप रोग विज्ञानं आदि से संबंधित वैज्ञानिक साहित्य उपलब्ध था। जब वर्ष 1989 में उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर अस्तित्व में आया उसके बाद से ही ग्रंथालय के सुधार एवं सुविधाएं बढाने पर बहुत जोर दिया गया । वर्तमान में ग्रंथालय अभी ग्रंथालय एवं सूचना केंद्र नामक अपने नए भवन में स्थित है । ग्रंथालय का ग्रंथ अनुभाग (book Section) भवन के भूतल पर स्थित है और संदर्भ अनुभाग भवन की पहली मंजिल पर स्थित हैं । ग्रंथालय कुर्सियों, रीडिंग टेबल्स, ओपन बुक्स रैक्स, बुक सेल्प्स, डिस्प्ले रैक्स, न्यूज पेपर टेबल के साथ कैटलॉग बॉक्स, कंप्यूटर और प्रिंटर से अच्छी तरह से सुसज्जित है वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और अनुसंधान विद्वानों के लिए विशेषरूप से सुविधाओं प्रदान की गयी है ।

ग्रंथालय में मृदा विज्ञान, सिल्वीकल्चर, जेनेटिक्स, पारिस्थितिकी, पादप रोग विज्ञान, कीट विज्ञान, अकाष्ठ वन उत्पाद, रसायन विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, कृषि वानिकी, वानिकी, अर्थशास्त्र और सांख्यिकी, वनस्पति विज्ञान, वन्यजीव, कंप्यूटर, एफएओ प्रकाशन, सामान्य ग्रंथ, हिंदी पुस्तको के साथ साथ संदर्भ ग्रन्थ जैसे पुनर्मुद्रण / शीर्षक / विश्वकोश / शब्दकोश आदि की लगभग 10000 ग्रंथ उपलब्ध हैं ।

ग्रंथालय में लगभग 102 विदेशी और 52 भारतीय पत्रिकाएँ परिबद्ध रूप में और लगभग 30 असीमित रूपों में पत्रिकाएँ उपलब्ध हैं। संस्थान ग्रंथालय ने वर्तमान में लगभग 15 भारतीय पत्रिकाओं की सदस्यता ली हुई है । पत्रिकाओं और पत्रिकाओं के सभी पुराने अंक कठोर जिल्दसाजी के माध्यम से लाइब्रेरी के संदर्भ अनुभाग में प्रदर्शित होते हैं। संस्थान के ग्रंथालय में सभी पुस्तको का वर्गीकरण ऑक्सफोर्ड दशमलव वर्गीकरण (ODC) पद्धति पर आधारित हैं एवं ग्रंथो का सूचीकरण कैटलॉग कार्ड की प्रणाली एंग्लो अमेरिकन कैटलॉगिंग–II नियम के अनुसार लेखक के नाम और शीर्षक आधार पर किया गया है । पुस्तकों को बढ़ती संख्या के साथ

प्रदर्शित किया गया है । ग्रंथो का विषयवार नामकरण कर अलमारियों प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित सभी पुस्तकों और पत्रिकाओं तक पाठकों की सीधी पहुँच होती हैं ।

ग्रंथालय में ग्रंथो के अलावा निम्नलिखित सूचना श्रोत उपलब्ध है –

विदेशी पत्रिकाएं (बाइंड),विदेशी पत्रिकाएं (लूज),भारतीय जर्नल्स (बाइंड),भारतीय पत्रिकाएं (लूज),कार्यवाही (Proceedings) (सम्मेलन/संगोष्ठी/कार्यशाला),कार्य योजनाएं (Working Plans),रिपोर्ट और रिकॉर्ड, टीएफआरआई परियोजना रिपोर्ट, आईसीएफआरई रिपोर्ट,अन्य वानिकी रिपोर्ट,फॉरेन जर्नल्सः 102 (ओल्ड वॉल्यूम बाइंडेड जर्नल टू 2001),इंडियन जर्नलः 54 (ओल्ड वॉल्यूम बाइंडेड जर्नल टू 2001),वर्तमान भारतीय पत्रिकाएं सदस्यता लें (2012): 15, बिक्री के लिए प्रकाशनरू,टीएफआरआई प्रकाशन 36, आईसीएफआरई प्रकाशन 90, सीएफआरएचआरडी प्रकाशन 15, वानिकी रिपोर्ट : 675, वानिकी रिकॉर्डः 850, बुलेटिनः 476, समाचार पत्र,कार्य योजना : 350, संगोष्ठी की कार्यवाही : 220, थीसिस / निबंध : 20

1-ग्रंथालय एवं सूचना केंद्र, शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर
(Library Cum Information Centre] Arid Forest Research Institute (AFRI), Jodhpur)

किसी भी अकादमिक या शोध संस्थान की रीढ़ की हड्डी उसका ग्रंथालय होता हैं । संस्थान का एक अच्छी तरह से भंडारित ग्रंथालय सह सूचना केंद्र है जिसमे 11 कमरे/हॉल में 40 पाठकों के बैठने की क्षमता हैं । ग्रंथ– ग्रंथालय में लगभग 10000 ग्रंथ हैं और ड्युई दशमलव वर्गीकरण पद्धति के अनुसार व्यवस्थित हैं। पुस्तकों को निम्न प्रमुख विषयों में वर्गीकृत किया गया है यथा – वानिकी, सिल्विकल्चर, कृषि वानिकी, वनस्पति विज्ञान, रसायन विज्ञान, प्लांट फिजियोलॉजी विज्ञान, पादप रोग विज्ञान, पैथोलॉजी, और पारिस्थितिकी एवं जलवायु परिवर्तन। संदर्भ पुस्तकों के लिए एक अलग स्थान है इनमे विश्वकोश, डिक्शनरी, वेल्थ ऑफ इंडिया, अटल, मैप्स आदि सभी पुस्तकों को वर्गीकृत कर अलमारियों में सुसज्जित किया गया हैं ।

पत्रिकाएँ– ग्रंथालय में 15 भारतीय और 10 विदेशी पत्रिकाओं की सदस्यता ले रखी हैं । न्यूज़लेटर्स/अन्य प्रकाशन– ग्रंथालय को विभिन्न संस्थानों की वार्षिक रिपोर्ट के अलावा कई मोनोग्राफ, शोध लेखों के पुनर्मुद्रण, न्यूज़लेटर्स निरूशुल्क प्रति के रूप में प्राप्त होते रहते हैं।

2-ग्रंथालय एवं सूचना केंद्र, वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर
(Library Cum Information Centre] Institute of Forest Genetics and Tree Breeding (IFGTB), Coimbatore)

संस्थान ग्रंथालय भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून के सर्वश्रेष्ठ ग्रंथालय में से एक है । ग्रंथालय में बहुत अच्छा संग्रह है जिनमे 8907 किताबें, 250 प्रिंट जर्नल, 185 ई–जर्नल, 3000 संदर्भ ग्रंथ, 4500 वानिकी संग्रह, 150 बैक वॉल्यूम है जो की उपयोगकर्ता को पूर्णरुपेण संतुष्ट करता हैं । इसके अलावा ग्रंथालय रेप्रोग्राफिक सुविधाएं, डीडीएस, आंतरिक सुविधाएं, सीएएस, एसडीआई के साथ साथ अन्य और सेवाएं भी प्रदान करता हैं ।

3-ग्रंथालय एवं सूचना केंद्र, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला
(Library Cum Information Centre, Himalayan Forest Research Institute (HFRI, Shiml)

संस्थान के पास वानिकी से संबंधित पुस्तकों, पत्रिकाओं और अन्य संबन्धित ग्रंथो एवं साहित्य का अच्छा संग्रह है जिनमे ग्रंथ,जर्नल/आवधिक,बाध्य आवधिक,अनबाउंड आवधिक, अनुसंधान पर वीडियो कैसेट/सीडी, प्रतिबंधित नक्शा,अप्रतिबंधित मानचित्र,मानचित्र सूची,अन्य मानचित्र,थीसिस आदि पठन सामग्री उपलब्ध है ।

ग्रंथालय द्वारा भुगतान (Paid) के आधार पर निम्नलिखित सेवाएं प्रदान की जाती हैं :–

- संदर्भ सेवाएं (Reference Services)
- रेफरल सेवाएं (Referral services)
- वर्तमान जागरूकता सेवाएं (Current Awareness Services)
- रेप्रोग्राफिक सेवाएं (Reprographic Services)
- कैब ट्री सीडी सेवाएं (CAB Tree CD Services)

4-ग्रंथालय एवं सूचना केंद्र, वन जैव विविधता संस्थान, हैदराबाद (Library Cum Information Centre, Institute of Forest Biodiversity (IFB), Hyderabad

वन जैव विविधता संस्थान में अच्छा ग्रंथालय है जो कि संस्थान के मुख्य भवन के मध्य में स्थित हैं । 2012 में संस्थान के साथ स्थापित ग्रंथालय छोटे–छोटे संग्रह और सेवाओं के साथ शुरू किया गया था । ग्रंथालय मे लगभग 2000 संग्रह है । ग्रंथालय ने अपने उपयोगकर्ताओं को अच्छी सेवाएं प्रदान कीं।
ग्रंथालय में निम्नलिखित विषयों या विभागों से संबंधित ग्रंथ और पत्रिकाएँ उपलब्ध है :

- वन जैव विविधता
- आनुवंशिक संसाधन प्रभाग
- जलवायु परिवर्तन और जैव विविधता
- वन पारिस्थितिकी

उपसंहार (Conclusion)

आधुनिक समाज में शोधकर्ता ने भले शोध के परिवर्तित रूप में ग्रंथालय के भौतिक स्वरूप के स्थान पर ऑनलाइन विधि अपनाने लगे हो, लेकिन भारतीय वानिकी अनुसंधान शिक्षा परिषद एवं उसके संस्थानों के ग्रन्थालयों के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि आज भी अच्छे शोध कार्य हेतु ग्रंथालय का भौतिक स्वरूप अति आवश्यक है । संदर्भ ग्रन्थ जैसे पुनर्मुद्रण / शीर्षक / विश्वकोश / शब्दकोश इत्यादि सूचना श्रोत मौलिक शोध के लिए अति आवश्यक है जो कि ऑनलाइन माध्यम से आवश्यक अच्छा साहित्य खोज किया जाना संभव नहीं हैं । विशिष्ट ग्रंथालय किसी विषय विशेष से जुड़े होने के कारण सम्बंधित विषयों का ज्ञान प्रबंधन का माध्यम ग्रंथालय के भौतिक स्वरूप से बेहतर नहीं हो सकता हैं ।

ग्रन्थ सूची (Bibliography)

1. Hammer, L. (2016, Nov. 1). Data, Information, knowledge – why is it so important?. DEZIDE. https://www.mbaknol.com/management-concepts/what-is-knowledge/
2. Arid Forest Research Institute (AFRI), Jodhpur retrieved from http://www.afri.icfre.gov.in.
3. Forest Research Institute (FRI), Dehradun retrieved from http://www.fri.icfre.gov.in .
4. Himalayan Forest Research Institute (HFRI), Shimla retrieved from http://www.hfri.icfre.gov . http://www.ifp.icfre.gov.in .
5. Indian council of forestry research and education (ICFRE) Dehradun retrieved from http://www.icfre.gov.in .
6. Institute of Forest Biodiversity (IFB), Hyderabad retrieved from http://www.ifb.icfre.gov.in
7. Institute of Forest Genetics and Tree Breeding (IFGTB), Coimbatore retrieved from http://www.ifgtb.icfre.gov.in .

8. Institute of Forest Productivity (IFP), Ranchi, retrieved from http://www.ifp.icfre.gov.in.
9. Tropical Forest Research Institute (TFRI), Jabalpur, retrieved from http://www.tfri.icfre.gov.in.